सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज

दुर्गापुर, दिनांक 18 नवम्बर 2017

हर समय मालिक के साथ जुड़े रहो। 24 घण्टें मालिक के साथ जुड़े रहो। जो हर समय मैं–2 करता रहता है। मैं ही हूँ, सबकुछ मैं ही करता हूँ सबकुछ, मैंने फसल तैयार की, मैंने कपास निकाली। जबकि मालिक की दया के बिना ना तो फसल तैयार कर सकता है और ना ही कपास निकाल सकता है। उसको हर समय याद रखना है। खाते पीते, उठते बैठते, चलते फिरते, हर काम करते समय, उस मालिक को याद रखना है। मैं–मैं करके बकरी अपना गला कटावे, मैं ना, मैं ना, कहकर मैंना बेसन शक्कर खावे। पाँच चीजें हैं काम क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। इन पाँचों में सबसे खतरनाक है अहंकार। और अहंकार का जुड़वा भाई है क्रोध। जहाँ अहंकार है वहाँ क्रोध होगा। अहंकार है मैं। ये मैं हमको खत्म करनी है। मैं हूँ ही नही कुछ, मै शून्य हूँ। तू ही है, तू ही है। गुरू नानक को जब उनके पिता ने दुकान पर बैठाया, और जब गुरू नानक सामान तोलने लगे। तो उन्होन पहले 1 किलो तोला, फिर 2 किलो तोला, फिर तीन किलो तोला, ओर जब 13 किलो पर आए तो, वहीं रूक गए और तेरा–तेरा, सबकुछ तेरा है, कहने लगे। सचमुच है भी सबकुछ उसी मालिक का। अपना कुछ नहीं है। अगर हमारी साँस रूक गई तो ये शरीर मिट्टी का ढ़ेर है। ये कुर्ता पजामा जो मैंने पहन रखा है, इसको भी उतार लेंगे, जो ये घड़ी, ये अँगूठी मेरे हाथ में है इसको भी उतार लेंगे और शमशान में ले जाकर आग के हवाले कर देंगे। तो क्या है हमारा संसार में? मैं किस बात पर अहंकार करूँ? हमारा कुछ नहीं है संसार में? जब हम संसार में आए थे तो कुछ भी साथ लेकर नहीं आए थे। और जब संसार से जाएँगें तो कुछ भी साथ लेकर नहीं जाएँगे। हमारी मृत्यु के समय जो पैसा हमारे बैंक में रह गया, वो पैसा हमने फालतू में कमाया। जब हमारी साँस ही रूक गई, जब हमारा शरीर मिट्टी का ढ़ेर हो गया, तो फिर वो पैसा हमारे किस काम का? वो मैंने फालतू में कमाया। जब हमें कोई यात्रा करनी होती है, तो हम पूरी तैयारी करते हैं। जैसे हमें बोम्बे जाना है, तो पहले हम टिकट बुक करवाएँगें। बैग में कपड़े भरते हैं, पानी की बोतल रखते हैं, खाने का सामान भी रखते हैं। ये तो हो गई हमारी बोम्बे तक की यात्रा की तैयारी। लेकिन वो जो है हमारा अंतिम सफर। उसकी हमने क्या तैयारी की है? वो सफर हमको याद ही नहीं है। हम भूल ही गए हैं उस सफर को। अगर हमको अंतिम सफर याद रहता तो हम जरूर तैयारी करते उस सफर की। जब कोई मर जाता है, तो हम सोचते हैं वो ही मर गया, मैं नहीं मरूँगा। जबकि इस संसार में मृत्यु ही एक ऐसी है जो निश्चित है, आएगी ही आएगी और जरूर आएगी। मकान आएगा या नही आएगा, कोई भरोसा नही। गाड़ी आएगी या नहीं आएगी, कोई भरोसा नहीं। लेकिन मृत्यु जरूर आएगी, और इसी बात को हम भूल गए हैं। हम सब मृत्यु से ड़रते हैं, लेकिन इस संसार में सबसे अच्छी चीज मृत्यु है। परसों के टाइम्स ऑफ इंण्ड़िया में एक खबर आई। नोएड़ा का एक उधोगपति की शव यात्रा पर बैंण्ड़ बाजा बज रहा है और उसकी चा बेटियाँ और पत्नी नाच रही हैं। उस उधोगपति की इच्छा थी कि उसकी मृत्यु के समय कोई रोना नही चाहिए। सब खुश होने चाहिएँ। ऐसा क्यों कहा उसने? क्योंकि भगवान ने जन्म बनाया, अच्छी चीज बनाई। मृत्यु भी तो भगवान ने बनाई, क्या भगवान ने गलत चीज बनाई? नहीं! भगवान कभी गलती नहीं कर सकता। गलती हम करते हैं नासमझी के कारण। हम मृत्यु से इसलिए भय खाते हैं, क्योंकि हमें अज्ञान है। हमें पता ही नही मृत्यु क्या चीज है? हम समझते है उस आदमी की मृत्यु हो गई, उसके परिवार की रोजी रोटी का जरिया खत्म हो गया। अरे! कौन मरा है आज तक भूखा? रोज लाखों लोग मरते हैं संसार में, क्या उन पर आश्रित लोग भूखे मर गए? कोई भूखा नहीं मरा। भगवान कोई गलती नहीं कर सकता है। उसने जहाँ जन्म बनाय, वहाँ मृत्यु भी बनाई। ये संसार द्वंद का बना है। जहाँ खुशी

वहाँ गम, जहाँ दुख वहाँ सुख, जहाँ दिन वहाँ रात, जहाँ गरीबी वहाँ अमीरी, हर चीज के दो पहलु हैं। हम बेकार में सारा दिन मैं–मैं करते रहते हैं, जबकि करने वाला कोई और है। हम मृत्यु से क्यों ड़रते हैं? जबकि मृत्यु अच्छी चीज है। हम दोगले मनुष्य हैं। जब हमारा कोई प्यारा चला जाता है, तो हम रोने लगते हैं। हाय! भगवान ये तूने क्या किया। लेकिन जब कोई बूढ़ा हमारे घर में बीमार हो, खांसता रहता हो, तो हम कहते हैं, हे भगवान इसको संसार से उठा ले। क्या हम दोगले नहीं हैं। क्या हमारा Double Standard नहीं है? हमको पता है असलियत क्या है, लेकिन हम फिर भी अंजान बनते हैं। लेकिन जो संत होते हैं वो जानते हैं मृत्यु क्या है? वो मृत्यु को बुलाते हैं और खुशी खुशी उसको गले लगाते हैं। क्योंकि उनको पता है उनका मोक्ष मृत्यु के बाद ही है। मोक्ष का मतलब होता है हमको संसार में दोबारा जन्म नहीं लेना है। क्यों नही लेना है हमको संसार में दोबारा जन्म? क्योंकि संसार दुखों का घर है। यहाँ हर कदम पर दुख ही दुख हैं। कोई सुखी नहीं है संसार में। कबीर साहब कहते हैं तन धर सुखिया कोई ना देखा, जो देखा सो दुखिया हो। फिर किसी ने पूछा आखिर कोई तो सुखी होना चाहिए संसार में? तब कबीर साहब कहते हैं एक ही आदमी सुखी है संसार में। संत सुखी जिन मन जीती हो। यानि एक संत ही सुखी है जिसने अपने मन को जीत लिया। सुख और दुख हमारे मन का खेल है। ना सुख कोई चीज है और ना दुख कोई चीज है। हम अपने मन से जिस चीज से दुखी हो जाएँ, वो दुख है। और जिस चीज से हम सुखी हो जाएँ, वो सुख है। संसार में ना सुख रहता है और ना दुख रहता है। इसी को बोलते हैं अगमापाई संसार। यानि जो आज है वो कल नहीं होगा। कल तो बहुत दूर की बात है, एक सैकिण्ड़ में नहीं रहेगा। अभी मेरी साँस चल रही है, हो सकता है अगले सैकिंण्ड़ मेरी साँस ही ना आए। तो हो गया ना अगमापाई संसार। शब्दानंद जी महाराज के तीन ऑपरेशन हो गए। लेकिन वो दुखी नहीं हुए। क्योंकि उन्होने उसको मन से दुख माना ही नहीं। संत सुखी क्यों रहता है? उसके पास दुख भी आते हैं और सुख भी आते हैं। संत ना सुख में सुखी होता है और ना दुख में दुखी होता है। वो एक समता में रहता है। क्योंकि वो जानता है ना सुख रहता है और ना दुख रहता है। ये दुख सुख हमारा अज्ञान है। एक आदमी जा रहा है सड़क पर, एक मोटर साईकिल वाला आता है और उसको टक्कर मार देता है। उस आदमी की टाँब टूट जाती है। उसको हॉस्पीटल ले जाते हैं, पांव पर पलस्तर चढ़वाकर, उसको उसके घर ले जाते हैं। उसकी बीबी पूछती है क्या हो गया। तो वो आदमी तेज तेज रोने लगता है, मेरी टाँग टूट गई, अब मैं कैसे कमाऊँगा, परिवार का गुजारा कैसे चलेगा? इतने लोग थे रोड़ पर, क्या एक मैं ही था, जो मुझ में ही टक्कर मार दी। पड़ोसी आते हैं, उनको भी यही बात बोलता है, रिश्तेदार आते हैं उनको भी यही बात बोलता है। तो खुद भी दुखी, सारा परिवार दुखी, पड़ोसी, रिश्तेदार दुखी, सबको दुखी कर देता हैं। अब एक दूसरा आदमी है, उसको भी मोटर साईकिल वाला टक्कर मार देता है, उसकी भी टाँग टूट जाती है, उसको हॉस्पीटल ले जाते हैं, उसके पैर पर पलस्तर लगवाकर उसके घर पर ले जाते है। उसकी बीबी पूछती है ये कैसे हो गया। वो आदमी बोलता है मालिक का शुक्र है आज मेरी जान बच गई, सिर्फ टाँग ही टूटी है। 2–3 महीने में ठीक हो जाएगी। मैं फिर से कमाने लगूँगा। पड़ोसी आते हैं उनको भी यही बात बताता है मालिक का शुक्र है आज तो मेरी जान ही बच गई, रिश्तेदार आते हैं उनको भी यही बात बताता है, तो खुद भी सुखी, परिवार भी सुखी, पडोसी, रिश्तेदार भी सुखी। तो एक ही परिस्तिथि में एक आदमी ने अपने को, अपने परिवार को, अपने रिश्तेदारों को दुखी कर दिया। वहीं दूसरी ओर दूसरे आदमी ने अपने को सुखी, अपने परिवार को सुखी, अपने रिश्तेदारों को सुखी रखा, और भगवान का शुक्रिया अदा करता रहा। उसके पास क्या चीज थी? उसके पास ज्ञान थां और ये ज्ञान उसको गुरू ने दिया था। गुरू ने उसकी सोच बदल दी। आप होशियारपुर जाओ, वहाँ लाइब्रेरी के बाहर मोटे–2 अक्षरों में लिखा है, ऐ सत्संगयों गुरू किसी को कुछ नहीं देता, सब को अपने–2 कर्म भुगतने पड़ते हैं। गुरू आपकी सोच बदल देता है। हमारे प्रारब्ध कर्म थे, जो हमको

चोट आ गई। ये बातें कौन बताता है? ये बातें हमको सिर्फ सतगुरू ही बताता है। इसलिए कबीर साहब कहते हैं सतगुरू खोजो रे भाई, जगत में दुर्लभ रत्न यही है। अगर इस संसार में कोई दुर्लभ चीज है, वो है सतगुरू। गुरू कोई चमत्कार नहीं करता है। अगर आप गुरू के पास जाओगे, चमत्कार के लिए, तो आप संसार में ही फँसे रहोगे। गुरू से वो चमत्कार माँगो, जो आपको संसार से निकाल दे। और वो चमत्कार गुरू कर देगा आपके साथ। अगर तुम चाहो तो, तुम्हारी अपनी मर्जी होनी चाहिए। तुम्हारी मर्जी के बिना कुछ नहीं होगा। अगर तुम चाहो कि मैं संसार से निकलना चाहता हूँ, तो गुरू आपकी मदद करेगा। और तुमको संसार से निकाल भी देगा। ये है सबसे बड़ा चमत्कार, जो गुरू आपके साथ करता है। संसार से निकालने का मतलब ये नहीं कि तुम झोला कमंडल लेकर जाओ ऋषिकेश। संसार से निकलने का मतलब होता है, संसार में रहकर, संसार से उपर उठो। गृहस्थ के सारे काम करके, गृहस्थ से उपर उठना है। यही है सबसे बड़ा चमत्कार, जो गुरू आपके साथ करता है।

राधास्वामी।